अध्याय 2: गोल

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 11 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	मेरी समझ से (पाठ से)	2 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 2.3	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 2.4	सोच-विचार के लिए	2 प्रश्न
प्रश्नावली 2.5	शब्दों के जोड़े — शब्द-युग्म	3 प्रश्न
प्रश्नावली 2.6	बात पर बल देना	1 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — मेरी समझ से (पाठ से)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" मेजर ध्यानचंद की इस बात से उनके बारे में क्या पता चलता है? (क) वे अत्यंत क्रोधी थे। (ख) वे अच्छे ढंग से बदला लेते थे। (ग) उन्हें हॉकी से मारने पर वे अधिक गोल करते थे। (घ) वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

हल

सही उत्तर: (घ) वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी से बदला लेने के लिए उसे हॉकी स्टिक से नहीं मारा, बल्कि छह गोल करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की।

उन्होंने बाद में उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा कि खेल में गुस्सा अच्छा नहीं — यह उनकी खेल भावना और सही सोच को दर्शाता है।

विकल्प (ख) आंशिक रूप से सही है, परंतु (घ) उनके मूल स्वभाव और सोच को पूरी तरह व्यक्त करता है।

उत्तर: (घ) वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

प्रश्न 2

नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (✦) बनाइए— लोगों ने मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहना क्यों शुरू कर दिया? (क) उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण (ख) उनकी हॉकी स्टिक की अनोखी विशेषताओं के कारण (ग) हॉकी के लिए उनके विशेष लगाव के कारण (घ) उनकी खेल भावना के कारण

हल

सही उत्तर: (क) उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण।

पाठ में लिखा है — 'बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे हॉकी

का जादूगर कहना शुरू कर दिया।'

यह उनके अद्वितीय खेल-कौशल (skill) का प्रमाण है, न कि केवल उनकी स्टिक या भावना का।

उत्तर: (क) उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण

प्रश्नावली 2.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए— शब्द | अर्थ या संदर्भ 1. लांस नायक | 1. स्वतंत्रता से पहले सूबेदार भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था। 2. बर्लिन ओलंपिक | 2. भारतीय सेना का एक पद (रैंक) है। 3. पंजाब रेजिमेंट | 3. सैनिकों के रहने का क्षेत्र। 4. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम | 4. वर्ष 1936 में जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित ओलंपिक खेल प्रतियोगिता, जिसमें 49 देशों ने भाग लिया था। 5. सूबेदार | 5. स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों की भारतीय सेना का एक दल। 6. छावनी | 6. अंग्रेजों के समय का एक हॉकी दल।

हल

1. लांस नायक → 2. भारतीय सेना का एक पद (रैंक) है।
2. बर्लिन ओलंपिक → 4. वर्ष 1936 में जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित ओलंपिक खेल प्रतियोगिता, जिसमें 49 देशों ने भाग लिया था।
3. पंजाब रेजिमेंट → 5. स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों की भारतीय सेना का एक दल।
4. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम → 6. अंग्रेजों के समय का एक हॉकी दल।
5. सूबेदार → 1. स्वतंत्रता से पहले सूबेदार भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था।
6. छावनी → 3. सैनिकों के रहने का क्षेत्र।

उत्तर: 1→2, 2→4, 3→5, 4→6, 5→1, 6→3

प्रश्नावली 2.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

पाठ में से ली गई निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए— "बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।"

हल

इस पंक्ति में मेजर ध्यानचंद ने एक गहरी जीवन-सच्चाई बताई है।
जब किसी खिलाड़ी ने उनके सिर पर हॉकी स्टिक मारी और वे वापस आकर बोले 'इसका बदला जरूर लूँगा', तो वह खिलाड़ी डर के मारे हर समय उन्हें देखता रहा।
इसका अर्थ है — जो व्यक्ति दूसरों के साथ गलत करता है, उसके मन में हमेशा यह डर बना रहता है कि कोई उसके साथ भी वैसा ही करेगा।
दोषी व्यक्ति का मन खुद उसे सताता है — यह पंक्ति पाप और पछतावे की मनोवैज्ञानिक सच्चाई बताती है।

उत्तर: जो व्यक्ति बुरा काम करता है, वह हमेशा इस भय में रहता है कि उसके साथ भी वैसा ही बुरा व्यवहार होगा। दोषी का मन स्वयं उसे डराता रहता है।

प्रश्न 2

पाठ में से ली गई निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए— "मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।"

हल

इस पंक्ति में मेजर ध्यानचंद अपनी निःस्वार्थ खेल भावना का वर्णन करते हैं।
वे इतने कुशल खिलाड़ी थे कि स्वयं गोल कर सकते थे, फिर भी वे गेंद साथी को देते थे ताकि उसे श्रेय मिले।
इससे पता चलता है कि वे व्यक्तिगत प्रसिद्धि से अधिक टीम की सफलता और साथियों के सम्मान को महत्व देते थे।
यही निःस्वार्थ भावना उन्हें महान बनाती थी — खेल-कौशल से वे 'हॉकी का जादूगर' बने, पर खेल-भावना से उन्होंने 'दुनिया का दिल' जीता।

उत्तर: ध्यानचंद स्वयं गोल करने के बजाय साथियों को श्रेय देते थे। इस निःस्वार्थ टीम भावना के कारण उन्होंने विश्व के खेल-प्रेमियों का दिल जीता।

प्रश्नावली 2.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

संस्मरण को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—
(क) ध्यानचंद की सफलता का क्या रहस्य था?

हल

पाठ में ध्यानचंद स्वयं कहते हैं — 'लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।'
लगन: उन्होंने शुरू में हॉकी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी सूबेदार मेजर तिवारी के प्रोत्साहन से खेलना शुरू किया और पूरी लगन से अभ्यास किया।
साधना: छावनी में बिना किसी निश्चित समय के वे मैदान में पहुँचकर अभ्यास करते थे।
खेल भावना: वे टीम की जीत को व्यक्तिगत प्रसिद्धि से ऊपर रखते थे और साथियों को श्रेय देते थे।
इन तीनों गुणों के कारण वे नौसिखिए खिलाड़ी से 'हॉकी के जादूगर' बन गए।

उत्तर: ध्यानचंद की सफलता का रहस्य था — लगन, साधना और खेल भावना। उन्होंने निरंतर अभ्यास किया, व्यक्तिगत प्रसिद्धि से अधिक टीम को महत्व दिया।

प्रश्न 2

संस्मरण को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—
(ख) किन बातों से ऐसा लगता है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे?

हल

पाठ में कई प्रसंग हैं जो यह सिद्ध करते हैं—
1. गोल का श्रेय देना: 'मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए।'
2. देश को प्राथमिकता: 'खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।'
3. बदला लेने का ढंग: जब किसी ने उन्हें चोट पहुँचाई, तो उन्होंने उस खिलाड़ी को चोट नहीं पहुँचाई बल्कि गोल करके और बाद में उसकी पीठ थपथपाकर दूसरों की भलाई चाही।

उत्तर: ध्यानचंद साथी खिलाड़ियों को गोल का श्रेय देते थे, देश की जीत को अपनी जीत से ऊपर रखते थे — ये सब उनके परोपकारी स्वभाव के प्रमाण हैं।

प्रश्नावली 2.5 — शब्दों के जोड़े — शब्द-युग्म

प्रश्न 1

"जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई।" इस वाक्य में 'जैसे-जैसे' और 'वैसे-वैसे' शब्द-युग्म हैं जिनमें एक ही शब्द दो बार आया है। आप भी ऐसे पाँच शब्द-युग्म लिखिए।

हल

ऐसे शब्द-युग्म जिनमें एक ही शब्द दो बार आता है:

1. धीरे-धीरे (जैसे: वह धीरे-धीरे चलने लगा।)
2. आगे-आगे (जैसे: वह आगे-आगे चलता रहा।)
3. बार-बार (जैसे: वह बार-बार पूछता रहा।)
4. हँसते-हँसते (जैसे: वह हँसते-हँसते बोला।)
5. खेलते-खेलते (जैसे: खेलते-खेलते वह थक गया।)

उत्तर: धीरे-धीरे, आगे-आगे, बार-बार, हँसते-हँसते, खेलते-खेलते

प्रश्न 2

"खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं।" इस वाक्य में दो शब्द-युग्म हैं जिनके दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हैं। आप भी ऐसे पाँच शब्द-युग्म लिखिए जिनमें दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हों।

हल

ऐसे शब्द-युग्म जिनमें दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हैं:

1. दिन-रात (जैसे: वह दिन-रात मेहनत करता था।)
2. आना-जाना (जैसे: उनका घर पर आना-जाना लगा रहता था।)
3. पढ़ना-लिखना (जैसे: पढ़ना-लिखना जरूरी है।)
4. उठना-बैठना (जैसे: बीमार होने पर उठना-बैठना मुश्किल हो जाता है।)
5. खाना-पीना (जैसे: यात्रा में खाना-पीना ठीक से नहीं होता।)

उत्तर: दिन-रात, आना-जाना, पढ़ना-लिखना, उठना-बैठना, खाना-पीना

प्रश्न 3

नीचे दिए गए शब्दों को योजक चिह्न (-) की सहायता से लिखिए— (क) अच्छा या बुरा (ख) उत्तर और दक्षिण (ग) छोटा या बड़ा (घ) गुरु और शिष्य (ङ) अमीर और गरीब (च) अमृत या विष

हल

(क) अच्छा या बुरा → अच्छा-बुरा
(ख) उत्तर और दक्षिण → उत्तर-दक्षिण
(ग) छोटा या बड़ा → छोटा-बड़ा
(घ) गुरु और शिष्य → गुरु-शिष्य

(ङ) अमीर और गरीब → अमीर-गरीब

(च) अमृत या विष → अमृत-विष

उत्तर: अच्छा-बुरा, उत्तर-दक्षिण, छोटा-बड़ा, गुरु-शिष्य, अमीर-गरीब, अमृत-विष

प्रश्नावली 2.6 — बात पर बल देना

प्रश्न 1

पाठ में 'ही', 'भी', 'तो' जैसे शब्दों का प्रयोग बात पर बल देने के लिए किया गया है। पाठ में से इन शब्दों वाले वाक्यों को चुनकर लिखिए और बताइए कि यदि उन वाक्यों में ये शब्द न होते तो उनके अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता।

हल

'ही' वाले वाक्य:

• 'लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।' — 'ही' से बल मिलता है कि सफलता का एकमात्र रहस्य यही तीन बातें हैं; बिना 'ही' के यह विशेष जोर नहीं रहता।

• 'मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है।' — 'ही' से यह निश्चितता व जोर व्यक्त होता है; बिना 'ही' के वाक्य साधारण हो जाता।

'भी' वाले वाक्य:

• 'जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई।' — 'भी' से यह ध्वनि निकलती है कि खेल के साथ-साथ पद भी बढ़ा; बिना 'भी' के यह साहचर्य कमजोर हो जाता।

• 'आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं।' — 'भी' से हर जगह की व्यापकता का बोध होता है।

'तो' वाले वाक्य:

• 'मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र तो है नहीं।' — 'तो' से विनम्रता और निश्चित खंडन का भाव आता है; बिना 'तो' के वाक्य कमजोर लगता।

• 'खेल में तो यह सब चलता ही है।' — 'तो' से खेल की सामान्य प्रकृति पर जोर पड़ता है।

उत्तर: 'ही', 'भी', 'तो' जैसे शब्द वाक्य में विशेष बल, निश्चितता या व्यापकता लाते हैं। इनके बिना वाक्य का अर्थ तो बना रहता है, किंतु जोर और प्रभाव कम हो जाता है।